भूमिका

हिंदी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिंदी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की श्रृंखला है *'भारतीय भाषा ज्योति'*। इस श्रृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। *'भारतीय भाषा ज्योति : असमिया'* पुस्तक इस श्रृंखला की एक कड़ी है।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों से निम्नलिखित भाषिक कुशलताओं की अपेक्षा की जाती है :

1. असमिया भाषी द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों को सुन कर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाले समाचारों, विज्ञापनों, उद्घोषणाओं और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. कक्षा में सहपाठियों के साथ अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं असमिया भाषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक सन्दर्भों में चर्चा करना,
4. असमिया भाषा में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा

अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे-छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोष और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,

5. विभिन्न विषयों पर छोटे-छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के पत्र लिखना तथा अपनी रुचि के परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना,
6. शब्दकोष की सहायता लेते हुए असमिया से हिंदी में और हिंदी से असमिया में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, तथा
7. आसाम के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों अथवा परिवेश की जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक की रचना की गई है। भाषा के चारों कौशलों - श्रवण, वादन, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप दिए गए हैं और उस के बाद मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री है। इसी प्रकार वाचन और लेखन कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन अनुच्छेद है और साथ ही अभ्यास भी। यह पुस्तक कक्षा में अध्यापक की सहायता से भाषा सीखने के लिए तैयार की गई है। इसलिए लिपि सीखने/सिखाने के लिए इस पुस्तक में अलग से कोई प्रावधान नहीं किया गया है। लेकिन भूमिका के बाद लिपि सीखने के लिए उपयोगी संकेत और निर्देश विस्तार पूर्वक दिए गए हैं। इसके माध्यम से अध्यापक कक्षा में लिपि सिखा सकेंगे। इन संकेतों की सहायता से उत्साही शिक्षार्थी अपने आप भी असमिया लिपि का अभ्यास कर सकेंगे।

इस पुस्तक के चार भाग हैं -- भूमिका, असमिया-लिपि तथा उच्चारण, पाठमाला तथा शब्दसूची। पुस्तक के पाठों में भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप तथा अभ्यास, वाचन-लेखन, अनुवाद अभ्यास तथा सरल व्याकरणिक व सांस्कृतिक बिंदुओं के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई हैं। 'शब्दसूची' में पाठों में आए असमिया शब्दों को वर्णक्रम में प्रस्तुत कर उनके अर्थ हिंदी में दिए

गए हैं।

पाठों का ढाँचा इस प्रकार है --

1. वार्तालाप
2. पाठ में आए नये शब्दों के अर्थ
3. अभ्यास
4. वाचन अनुच्छेद (पढ़िए और समझिए)
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नये शब्दें के अर्थ
6. अनुच्छेद संबंधी अभ्यास
7. अनुवाद तथा लेखन अभ्यास
8. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पाठ में दिए गए वार्तालाप तथा वाचन अनुच्छेद में एक सी ही संरचनाओं का प्रयोग किया गया है। यही संरचनाएँ पाठ के शिक्षण-बिंदु हैं। अनुवाद तथा लेखन अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण-बिंदुओं पर आधारित हैं।

पुस्तक के वार्तालापों का चयन भाषा-प्रयोग की उन सामान्य स्थितियों को लेकर किया गया है जिनका सामना हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी परिचित के घर जाना, किसी उत्सव में सम्मिलित होना, बढ़ती-महंगाई पर चर्चा करना, किराये का मकान खोजना या मकान बनवाने के कष्टों की चर्चा करना, इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना, किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जाना आदि वार्तालाप के विभिन्न विषयों को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इससे विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि असमिया भाषा में निवेदन कैसे करते हैं, आदेश कैसे देते हैं, मना कैसे करते हैं, नम्रता कैसे अभिव्यक्त की जाती है, हास-परिहास कैसे किया जाता है, सांत्वना कैसे दी जाती है आदि। पाठ के वार्तालाप और वाचन अनुच्छेद की विषय

वस्तु में भी यथासंभव साम्य रखने का प्रयास किया गया है। वाचन अनुच्छेदों के लिए लेखन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। जैसे कोई अनुच्छेद वृत्तांत रूप में है तो कोई विवरणात्मक, कोई संवादात्मक, कोई आत्मकथा के रूप में। कहीं निबन्ध शैली को अपनाया गया है तो कहीं संस्मरण का सहारा लिया गया है। कहीं कहानी जैसा सरस माध्यम लिया गया है तो कहीं पत्र जैसा उपयोगी माध्यम।

पाठमाला में 24 पाठ हैं। इन पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षण पाठ 4 इकाइयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में 5-5 शिक्षण पाठ हैं जिसमें से एक-एक पुनर्भ्यास पाठ है। इस प्रकार इस पुस्तक में पाठ 6, 12, 18 और 24 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षणार्थ पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के मूलतत्व कुछ इस प्रकार हैं:--

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर
4. सामान्य से तकनीकी की ओर

भाषाई संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप का स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य-सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जानेवाले शिक्षण बिंदुओं से संबद्ध कुछ संरचनाएँ आरंभ के पाठों में आ गई हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पाठ विशेष की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द सूची में दर्शाया गया है।

शिक्षण-पाठों में आई हुई संरचनाएँ

प्रत्येक पाठ में दो अथवा दो से अधिक शिक्षण बिंदुओं का प्रयोग किया गया है। अधिकांशतः

यह वाक्य साँचे के रूप में है। वाक्य साँचों को निम्न प्रकार से सूची-बद्ध किया जा सकता है।

पाठ नं

1.	(i)	क्रियाहीन वाक्यों का प्रयोग
	(ii)	अनुज्ञा वाक्यों का प्रयोग
2.	(i)	क्रियाहीन वाक्य + संबंध पद
	(ii)	अनुज्ञा (तुच्छार्थ)
3.	(i)	क्रियायुक्त वाक्य -- सामान्य वर्तमान
	(ii)	सामान्य वर्तमान -- नकारात्मक
4.	(i)	अपूर्ण वर्तमान
	(ii)	पूर्ण वर्तमान
5.	(i)	वर्तमान काल के विभिन्न रूप
	(ii)	'लाग' क्रिया के रूप
	(iii)	व्यक्तिवाचक सर्वनाम के बहुवचन रूप
6.	1 से 5 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण विंदुओं के पुनरावलोकन	
7.	(i)	सामान्य भूत के विभिन्न रूप
	(ii)	अन्य सर्वनामों का प्रयोग
	(iii)	वर्तमान काल - नकारात्मक रूप
8.	(i)	सामान्य भूत काल
	(ii)	सामान्य भूत काल का नकारात्मक वाक्य
9.	(i)	पूर्णभूत काल

10. (i) भविष्य काल

(ii) भविष्य काल के नकारात्मक वाक्य

11. वर्तमान, भूत और भविष्य काल के अपूर्ण रूपों के अन्य प्रयोग

12. 7 से 11 तक के पाठों के शिक्षण बिंदुओं के पुनरावलोकन

13. (i) "पार" सहायक क्रिया का प्रयोग

(ii) कृदंत क्रिया का प्रयोग

(iii) भविष्य काल में नकारात्मक क्रिया का प्रयोग

14. (i) 'ৈল' (-लोइ) युक्त सहायक क्रिया के साथ विभिन्न काल की मूलक्रियाओं के रूपों के प्रयोग

15. प्रेरणार्थक क्रिया - तीनों कालों में

16. (i) क्रियावाचक संज्ञा का प्रयोग

(ii) विभिन्न परिस्थितियों में "लाग" क्रियापद का प्रयोग

17. कर्मवाच्य का वाक्यों का प्रयोग

18. 13 से 17 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं के पुनरावलोकन

19. (i) 'हेनो' की सहायता से परोक्ष उक्ति का प्रयोग

(ii) तिर्यक कर्मवाच्य का प्रयोग

20. (i) "-ৈপ", "-ওঁতে" (-इ, -ओंते) इत्यादि जैसी असमापिका क्रियाओं के प्रयोग

(ii) मिश्र वाक्यों के निर्माण

21. (i) -ৈপ (-इ) जैसी असमापिका क्रियाओंका दृढ़ीकरण और द्वित्त प्रयोग

(ii) क्रियावाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग दृढ़ीकरण

22. (i) "যদি", "যেতিয়া" (जदि, जेतिया) आदि अव्यय से संयुक्त वाक्य गठन

(ii) "-ইলেহেঁতেন" (-इलेहेंतेन) युक्त हेतु हेतु भूत काल की क्रिया का प्रयोग

23. परोक्ष उक्ति का प्रयोग -- क्रियावाचक संज्ञा का प्रयोग दृढ़ीकरण

24. 19 से 23 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं के पुनरावलोकन

पहले ही कहा जा चुका है कि हर पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए नये शब्दों को दिया गया है। ऐसे बहुत से शब्द हैं जो असमिया भाषा में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इनमें से बहुत से शब्दों का प्रयोग हिंदी में भी होता है। इस संदर्भ में उन शब्दों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जो रूप की दृष्टि से तो दोनों भाषाओं में समान हैं पर उनके अर्थ असमिया और हिंदी में बहुत भिन्न हैं। शब्दों के वे अर्थ पहले दिए गए हैं जो उस पाठ के सन्दर्भ के उपयुक्त हैं। इसके पश्चात् यदि आवश्यक हुआ तो वे अर्थ भी दिए गए हैं जो सर्वाधिक प्रचलित हैं।

पाठों के अभ्यास उन में सिखाए गए पाठ्य-बिंदुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिन्दुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियमानुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिंदुओं के विषय में ली जाएगी जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नये वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों की सहायता से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य गढ़ सकता है जिनका प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं आया है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिंदु को रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न भाषा संरचना और शब्दों से संबंधित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं - शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाना, वाक्य विस्तार करना, वाक्य रूपों में परिवर्तन

करना, एक ही वाक्य को विभिन्न रूपों में कहना, वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना, उचित शब्दों का चयन करना, वाक्य पूरे करना, कर्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में उचित प्रत्यय लगाना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। प्रत्येक पाठ में कम से कम पाँच-छह अभ्यासों का समावेश किया गया है।

वाचन अनुच्छेद का मुख्य उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द भण्डार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं - वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नों से छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति दोनों की ही परीक्षा हो सकेगी।

प्रथम पाँच पाठों की संपूर्ण पाठ्य-सामग्री असमिया लिपि में और उच्चारण सिखाने हेतु देवनागरी में भी दी गई है। ऐसा इसलिए भी किया गया है ताकि विद्यार्थी आरम्भ में भाषा सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सके। जब वह भाषा से थोडा बहुत परिचित हो जाएगा तो लिपि सीखने में भी उसे सहायता मिलेगी। वैसे अपेक्षा यही की जाती है कि भाषा और लिपि दोनों का शिक्षण साथ-साथ ही आरंभ किया जाए। असमिया लिपि सीखने के लिए 20 घंटों की निर्देश सामग्री पर्याप्त है। इसके पश्चात विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के असमिया लिपि में पाठ्य सामग्री को पढ़ सकेगा। पहले पाँच पाठों में भाषा का भी कुछ ज्ञान विद्यार्थी को हो जाएगा। छठा पाठ पुनर्भ्यास के लिए है। इससे पहली पाठ्य इकाई के शिक्षण बिंदुओं पर विद्यार्थी के अभी तक सीखे गए भाषाई बिंदुओं की परीक्षा हो जाएगी। छठे पाठ से चौबीसवें तक के पाठों को देवनागरी में इसलिए नहीं दिया गया है क्योंकि अब तक छात्र असमिया लिपि से परिचित हो गए होंगे। व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अवश्य व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया जाए। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम कर ले। इससे व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

पुस्तक का अंतिम खंड है - शब्द सूची। पाठों में प्रयुक्त शब्दों की सूची वर्णमाला के क्रम

में दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें शब्दों के मूल रूप अर्थात् कोशीय रूप को ही स्थान दिया गया है। संज्ञा शब्दों का मूल रूप ही दिया गया है, न कि उनके रूपांतरित रूप - जैसे- *পথাৰত, পথাৰলৈ, পথাৰৰ* (पठारत, पठारलोइ, पठारर) आदि रूप न देकर केवल *'পথাৰ'* (पठार) शब्द को ही सूची में दिया गया है। इसी तरह क्रियाओं के धातु रूप को ही सूची में स्थान दिया गया है, काल और वृत्ति के अनुसार उनके विभिन्न रूपों को नहीं। जैसे - यहाँ केवल *'কৰ'* (कर) रूप को ही रखा गया है। इससे बने *'কৰা, কৰক, কৰিছে, কৰিলে, কৰিব'* (करा, करक, करिसे, करिले, करिबो) 'कर, कीजिए, कर रहा है, किया, करेंगे' आदि रूपों को नहीं दिया है।

शब्द-सूची में असमिया शब्दों के दाहिनी तरफ शब्दों का हिंदी अर्थ दिया गया है। दोनों के बीच में उन पाठों की क्रम संख्याएँ भी दी गई हैं, जिनमें वे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। चूंकि प्रत्येक पाठ में दो दो शब्द-सूचियाँ हैं ; अतः मूल पाठ के शब्दों को '**क**' और पठन सामग्री के शब्दों को '**ख**' वर्ग में दिखाया गया है। उदाहरण के लिए *'চাহ'* (साह) शब्द के सामने 3 (क) लिखा हुआ है। इसका अर्थ है कि यह शब्द तीसरे पाठ के वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है। *'মানুহ'* (मानूह) शब्द की दाहिनी तरफ 1 (ख) दिया गया है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वाचन अनुच्छेद में है। *'আবেদন'* (आवेदन) शब्द की दाहिनी तरफ 21 (ग) दिया गया है जिसका अर्थ है यह शब्द इक्कीस पाठ की वाचन अनुच्छेद के दूसरे भाग में आया है। शब्दसूची के बाद असमिया गिनती 'एक' से 'सौ' तक संख्या में तथा शब्दों में दी गई है।

इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना जरूरी है। किसी भी भाषा को पढ़ाने के लिए कोई भी एक तरीका ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो, विशेष रूप से द्वितीय भाषा पढाने के संदर्भ में यह बात शत-प्रतिशत सत्य है। द्वितीय भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक-जैसा ही प्रयास करना होगा।

विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सिखाई गई संरचनाओं तथा असमिया शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उचित वातावरण तैयार करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रखकर ही सीखना और सिखाना चाहिए। इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचनाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढाव भी होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाए जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सके। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। फिर अपने साथ विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप में पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। तत्पश्चात् बोधन संबंधी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी मदद करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का वाचन कर पाएगा और समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। इस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि कोई सन्देह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। हमारे विद्यार्थी वयस्क भी हो सकते हैं, अतः बार बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और उनके लिए यह अभ्यास अरुचिकर भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। उस के बाद विद्यार्थियों के संशयों का निवारण कक्षा में कर सकते हैं।

छात्रों से वाचन अनुच्छेदों को मौन रूप से पढ़ने के लिए भी कहें। अनुच्छेद के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वतः देने का प्रयास करें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की मदद लें। शिक्षक छात्र को इतना समय अवश्य दें कि वह पूरे अनुच्छेद को मौन रूप से 2-3 बार पढ़ सकें।

इसके पश्चात् यदि समय रहे तो प्रत्येक छात्र से बारी-बारी से उस अनुच्छेद को ऊँचे स्वर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अंतिम वाचन शिक्षक द्वारा ही किया जाए जिससे छात्र के कानों में सही उच्चारण दर्ज होता रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक इसकी सावधानी पूर्वक जाँच करें और छात्र के सन्देह और समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर उनका निदान करें।

कुछ पाठों में असमिया भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिंदी में भी उसी तरह के मुहावरे हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिंदी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उन के अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ के वार्तालाप में सभी वाक्यों का हिंदी अनुवाद दिया गया है। अनुवाद करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि हिंदी भाषा की स्वाभाविकता बनी रहे। पर कहीं कहीं हिंदी में कुछ वाक्य बनावटी या अस्वाभाविक लग सकते हैं। असमिया भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं के प्रयोग देने के प्रयत्न में हो गया है। अनुवाद केवल इसलिए दिया गया है ताकि छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग असमिया भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा केवल संरचनाओं व शब्दों के अभ्यास द्वारा ही सीखी जा सकती है। हिंदी अनुच्छेद का असमिया भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करे कि उसका अनुवाद असमिया भाषा की संरचना में हो, हिंदी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिंदी अनुवाद नहीं दिए गए हैं। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे छात्र असमिया भाषा को उसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करे और स्वयं उसका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करे।

भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए असमिया भाषा के परिवेश का अनुभव तथा असमिया भाषा भाषियों से सम्पर्क स्थापित करना महत्वपूर्ण है। ऐसा प्रयास किया जाए कि छात्रों को असमिया भाषा-भाषियों के सम्पर्क में आने तथा संबंधित भाषा के गीत, कविताएँ,

वार्तालाप, भाषण आदि सुनने का अवसर मिल सके। साथ ही छात्रों को असमिया भाषा के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी दिखाए जाएँ। यदि उपलब्ध हो सके तो असम राज्य के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए। संभव हो तो कक्षा में असम राज्य के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के चित्र लगाए जाएँ तथा वहाँ की विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का ऑडियो-वीडियो माध्यम से भी परिचय कराया जाए।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात् छात्रों से जो अपेक्षाएं की गई हैं उनका विवरण पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियों ने इस पुस्तक से कितना सीखा है वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

मेरी बात अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. ई. अण्णामलै तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी डॉ. गोविन्द शर्मा रजनीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि *भारतीय भाषा ज्योति* श्रृंखला की पुस्तकों का रूपांकन तथा संकल्पन करने तथा कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। *भारतीय भाषा ज्योति* श्रृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफ़ी पहले हो गया था ; पर यह बहुमूल्य सामग्री बरसों तक प्रकाशन की प्रतीक्षा करती रही। संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. ओंकार नाथ कौल तथा संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो. उदय नारायण सिंह के प्रयासों से ही इन पुस्तकों को प्रकाश की किरण देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से प्रो. सिंह ने हिंदी के माध्यम से तैयार की गई *'भारतीय भाषा ज्योति'* की श्रृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी ली है। इस श्रृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक निर्माण कार्यशाला में डॉ. फणीन्द्र नारायण दत्त बरुवा, डॉ. परेशचन्द्र देव शर्मा तथा

डॉ. बासंती देवी का अत्यंत रचनात्मक योगदान रहा। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। कार्यशाला में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में डॉ. वीरभद्र मिश्र की प्रतिभागिता के लिए भी मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

उक्त कार्यशाला के उपरांत आयोजित पुनरीक्षण-कार्यशाला में संशोधन, परिवर्धन, पुनर्लेखन आदि का कार्य तत्परता से संपन्न कर सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए डॉ. हीरालाल बाछोतिया, प्रो. पी. एन. दत्त बरूवा, श्री देवजित शर्मा तथा श्री बिश्वदीप गोगोई के अमूल्य योगदान के लिए उनके प्रति भी मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

मैं श्रीमती स्वर्णाली चौधरी को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अतीव ध्यान तथा लगन से इस पुस्तक के डी.टी.पी. का काम किया है। ह मारे संस्थान के पुस्तकालय ज़े अध्यज डॉ. सी.आर. सुलोच ाा, डॉ. बी.ए. शारदा, डॉ. आर. सुम ाुमारी तथा जॉटलोजर मीर िस्सार हुसै ा, ंप्यूटर ज़ेंद्र ज़े प्रो. (डॉ.) साम् मोह ा लाल तथा उ ा ज़े सहज्र्मी, ज्लाज्ार श्री ह. म ाोहर, हमारे मुद्रजालय ज़े प्रबंधज श्री एस.बी. बिश्वास और उन के सहयोगियाँ तथा प्रज्ाश ा विभाज ज़े अध्यज डॉ. रामसामी तथा उ ा ज़े सहयोजी आर. ांदीश इ ा सब ज्ा भी मैं यहाँ ृतज्ञता पूर्वज स्मरज ज्रती हूँ। संस्था ा ज़े पाठ्य सामज्री िर्माज ज़ेंद्र ज़े मेरे सहयोजी श्री. एस्.एस. यदुराज ा, डॉ. बी. मल्लिज्ार्जु ा, डॉ. आई.एस. बोरज्र, श्रीमती टी.वी. वाजी ज्ी सहज्ारिता भी अविस्मरजीय है। उसी प्रज्ार हमारे लेजा विभाज ज़े मुज्य श्री. बी.जी. मंजु ााथ, और उ ा ज़े सहज्र्मी श्री ए ा. यतिराजु तथा श्री एस. राजु भी ज्ार्यशालाओं ज़े संचाल ा में मेरी बहुत मदद ज्ी है और मेरी ध यवाद ज़े पात्र हैं।

मैं अप ो पति प्रो. ज़े.वी. श्रीिवास ा ज़े प्रति मेरी अपार ृतज्ञता यहाँ प्रज्ट ज्रती हूँ जि हों ो मही ाों तज चल ोवाली मेरी ज्ार्यशालाओं ज़े संचाल ा में महत्वपूर्ज शैजजिज तथा सामयिज सहज्ारिता दी है। छुट्टि ज़े दि ाों तथा ऑफिस समय ज़े बाहर भी घंटों तज घर ज्ी चिंता ा ज्र ज़े 'भारतीय भाषा ज्योति' शृंजला ज्ी पुस्तज्ों ज़े िर्मा ा में मज्ा हो ाा मुझे उ ा ज्ी ही मदद से ज्ार्यसाध्य हुआ है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आदर व्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे एवं इस के विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाएँ हमें अवगत कराएँगे।

मैसूर
15/5/2005

बी. श्यामला कुमारी
प्रो. एवं उपनिदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर